प्रातः क्लास 16-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। शिवभगवानुवाचः शालीग्रामों प्रित। यह तो सारे कल्प में एक ही बार होता है। यह भी तुम जानते हो औरकोई जान न सके। मनुष्य उस रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को बिल्कुल ही नहीं जानते। मनुष्य हाकर और नहीं जानते तो जनावर ठहरे ना। यह भी जानते हैं स्थापना में बिघ्न भी पड़ती है। इसको कहा जाता है ज्ञान-यज्ञ। बाप समझाते हैं इस पुरानी दुनिया में तुम जो कुछ देखते हो वह सभी स्वाहा हो जाना है। फिर उसमें ममत्व नहीं रखना चाहिए। बाप आकर पढ़ाते भी हैं नई दुनिया के लिए। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। यह है विधस और वायसलेस वर्ल्ड का संगम। जब कि बदली होती है। नई दुनया को कहा जाता है वायसलेस वर्ल्ड। आदी सनातन देवी-देवता धर्म ही था। यह तो बच्चे जानते हैं पायन्दस बहुत समझने की है। बाप रात-दिन कहते रहते हैं बच्चों तुमको बहुत गुह्य ते गुह्य बातें सुनाता हूं। जहां तक बाप हैं पढ़ाई चलनी है। फिर पढ़ाई भी बन्द हो जावेंगी। इन बातों को तुम्हारे सिवाय कोई भी नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। जो फिर बाप-दादा ही जानते हैं। तुम भी नहीं जानते हो। कितने गिरते हैं। कितनी तकलीफ होती है। ऐसे नहीं सदैव पावत्र रह सकते हैं। पवित्र नहीं रहते हैं तो फिर सजा भी खानी पड़े। माला आठ दाने ही पास विथ आनर होते हैं। फिर प्रजा भी बनतेंगे बनते हैं। वह तो योगबल से बन न सके। यह बहुत ही समझने की बातें हैं। तुम कोई भी बेसमझ को समझाओ तो वह समझ थोड़ें ही सकते हैं। टाईम लगता है। सो भी जितना बाप समझा सकते हैं उतना तुम नहीं। रिपीट्स आद जो आते हैं उनको बाप ही जानते हैं। फ्लाना विकार में गिर गया। यह हुआ। नाम तो नहीं बता सकते हैं। नाम बतावें तो फिर उन से कोई बात करने भी पसन्द नहीं करेंगे। सभी धिक्कार की दृष्टि से देखेंगे। मुंहा पड़ जावेंगे। की कमाई चट हो जावेंगी। यह तो जिसने धक्का खाया कैसे खाया वह तो बाप ही जाने। यह बड़ी गुप्त बातें हैं। वह तो बाप ही जानते हैं। तुम कहते हो [illegible] उनको तुम ने बहुत [illegible] तुम्हारे मदद कर सकते हैं। परन्तु वह भी जब हाजिर हो ना। समझो गवर्नर को तुम बहुत अच्छी रीत समझाते हो, परन्तु वह थोड़ें ही किसको समझा सकेंगे। कोई को समझावे तो मानेंगे ही नहीं। जिसको समझने का होगा वही समझेंगा। दूसरे को थोड़ें ही समझा सकेंगे। उनको सभी कहने लगेंगे यह क्या कहते हो। ब्रह्माकुमारियों ने माथा खराब कर दिया है। यह तो कांटों का जंगल है उनको हम मंगल बनाते हैं। मंगलम भगवान विष्णु ... कहते हैं ना। यह श्लोक आद सभी भक्ति मार्ग के हैं। मंगल तब हो जब विष्णु का राज्य होता है। विष्णु अवतरण भी दिखाते हैं। बाबा ने तो सभी कुछ देखा है। अनुभव है ना। सभी धर्म वाले को अच्छी रीत जानते हैं। प्रसल बाप किसके शरीर में आवेंगे तो एक प्रसनलिटी भी चाहिए ना। तब कहते हैं बहुत जन्मों के अन्त में जब कि वह यहां का बड़ाअनुभवी होता है तब में प्रवेश करता हूं। वह भी साधारण। प्रसनलटी का मतलब यह नहीं नहीं कि राजा रजवारा है। नहीं। इनको तो बहुत अनुभव है। इनके रथ में ही आता हूं बहुत जन्मों के अन्त में। सो तो जब कोई समझे कि यह भगवान की मत है। सभी भगवान कैमत पर चलते हैं। तुमको समझाना पड़े यहराजधानीस्थापन होती है। माला बनती है। यह राजधानी कैसे कैसे स्थापन होती हैकोई राजा कोई रानी कोई कैसे बनते हैं यह भीबातें एक दिन में तो कोई समझ न सके। बेहद का बाप ही बेहद का वरसा देते हैं। भगवान आकर समझाते हैं तो भी मुश्किल बहुत थोड़ें पवित्र बनते हैं। बाकीकितने सजा खाते हैं। सजाएं खाकर प्रजा बनते हैं। राजाएं कितने, प्रजाकितने बनते हैं। यह सभी समझाने में टाईम चाहिए। और साथ2 बहुत मीठा भी बनना है। कोई को भी दुःख नहीं देना है। बाप आते ही हैं सभी को सुख का रास्ता बताने। दुःख से छुड़ाने आते हैं। तो फिर खुद किसको दुःख कैसे देंगे। यह सभी बातें तुम बच्चे समझते हो। बाहर वाले बड़ा मुश्किल समझते हैं। जो भी सम्बन्धी आद हैं उन सभी से ममत्व तोड़ देना है। घर में रहना है परन्तु नाम मात्र। यह तो बुधि में है कि यह तो पुरानी दुनिया है। सब खत्म हो जानी है। परन्तु यह ख्यालात भी सभी को थोड़ें ही रहती है। जो अन्यन्य बच्चे हैं वह समझते हैं। वह भी

अभी सीखते, पुरुषार्थ करते रहते हैं। बहुत फेल भी हो पड़ते हैं। माया की चक्की बहुत चलती है। वह भी बड़ी बलवान है। परन्तु यह बातें और कोई थोड़े ही समझा सकते हैं। तुम्हारे पास आते हैं समझने चाहते हैं यहां क्या होता है। इतने रिपोर्टस आद क्यों आते हैं। अभी इनलोगों की तो बदली होती रहती है। तो फिर एक एक को बैठ समझाना पड़े। यहां भी आते हैं, कोई अच्छा हुआहोगा तो झट कह देंगे हमको इनका सभी मालूम है। यह बहुत अच्छी संस्था है। राजधानी की स्थापना की बातें बड़ी गुह्य गोपनीय है। बेहद का बाप बच्चों को मिला है तो कितना हर्षित होना चाहिए। हम विश्व का मालिक, देवतायें बनते हैं तो हमारे में दैवी गुण भी चाहिए। एमआबजेक्ट तो सामने खड़ी है। यह है ही नई दुनिया का मालिक। तो यह है सब से न्यारी बातें। मनुष्य तो समझ न सके। यह तुम सभी समझते हो। हम पढ़ते हैं। बेहद का बाप जो नालेजफुल है वह हमको पढ़ाते हैं। अमरपुरी अथवा हैविन में जाने के लिए यह नालेज मिलती है। आवेंगे वही जिन्हों ने कल्प 2 राज्य लिया है। कल्प पहले माफिक। अपनी हम राजधानी स्थापन कर रहे हैं। यह माला बन रहें हैं नम्बरवार। जैसे स्कूल में भी जो अच्छा पढ़ते हैं उनको स्कालरशिप मिलती है। वह तो है हद की बातें। तुमको मिलती है बेहद की। जो तुम बाप के मददगार बनते हो। वही ऊंच पद पाते हैं। वास्तव में तो मदद अपने को ही करनी है। पवित्र बनना है। हम जो सतोप्रधान थे वही फिर से बनना जरूर है। बाप को याद करना जरूर है। उठते-बैठते चलते बाप को याद कर सकते हैं। जो बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। उनको बहुत खुशी से याद करना है। परन्तु माया छोड़ती नहीं है। अनेक प्रकार के किसम2 के रिपोर्टस लिखते हैं। बाबा हमको माया के विकल्प बहुत आते हैं। बाप कहते हैं यह तो युध का मैदान है। 5 विकारों पर जीत पानी है। बाप को याद करने से। यह भी तुम समझते हो हम सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हैं। फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप आकर के समझाते हैं। भक्ति मार्ग वाले कोई भी नहीं जानते हैं। यह तो पढ़ाई है। बाप कहते हैं तुम पावन कैसे बनेंगे। तुम पावन थे फिर बनना है। देवतायें पावन थे ना। बच्चे जानते हैं हम स्टुडन्ट्स पढ़ रहे हैं। भविष्य में फिर सूर्यवंशी राज्य में हम आवेंगे। इसके लिए पुरुषार्थ भी अच्छी रीत करना है। सारा मार्किस के ऊपर मदार है। राम चन्द्र त्रेता में क्यों नापास हुआ। युध के मैदान में फेल हो गया। उन्हों ने फिर युध का नाम सुनकर तीर कमान आद दे दिये हैं। क्या वहां बाहूंबल की लड़ाई की थी। जो तीर-कमान आद चलाई। ऐसी कोई बात नहीं। यह सभी बूत बनाया हुआ है। तीर की चुहबन बहुत तीखी होती है। उन में जहर रहता है। आदमी को ही खत्म कर देते हैं। आगे बाणों की लड़ाई चलती थी। इस समय तक भी निशानियां हैं। कोई2 चलाने में बड़े ही होशियार होते हैं, जब तक भाग के अन्दर न जाये तब तक जहर फैल न सके। इस लड़ाई आद की अभी कोई बात ही नहीं। तुम जानते हो शिव बाबा ही ज्ञान का सागर है। उनका यह ज्ञान है जिससे हम यह पद पाते हैं, अभी बाप कहते हैं देह सहित देह के सभी सम्बन्धों से ममत्व तोड़ना है। यह यह सभी पुराना है। नई दुनिया में गोल्डेन एजेड भारत था। कितनानाम मशहुर था। भारत का प्राचीन योग किसने और कब सिखायायह किसको भी पता नहीं है। जब तक खुद न आये समझावे। यह है नई चीज़। कल्प पहले जो होता आया है वही रिपीटहोगा। इसमें फर्क नहीं पड़ सकता। यह भी तुम जानते हो। यह भीलचा हुआ है द्रौपदी ने पुकारा कि हमको नंगन करते हैं इससे बचाओ। बाप कहते हैं अभी यह अन्तिम जन्म पवित्र रहने से फिर 21 जन्म तुम कब नंगन नहीं होंगे। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। फिर भी सभीएक रस थोड़े ही पढ़ते हैं। रात-दिन का फर्क है। आते हैं पढ़ने लिए फिर थोड़ा पढ़ कर गुम हो जाते हैं। जो अच्छी रीत समझते हैं वह अपना अनुभव भीसुनाते हैं। कैसे हम आये थे कैसे हमने पवित्रता की प्रतज्ञा की। बाप कहते हैं पवित्रता की प्रतिज्ञा कर फिर एक बार भी पतित बना तो की कमाई चट हो जावेंगी। फिर वह अन्दर में खाता रहेगा। किसको भी कह न सकेंगे कि बाप को यादकरो। भूल बात बाबा विकार के लिए ही

पूछते हैं। यह तो पढ़ाई रेगुलर पढ़नी है। बाप कहते हैं हम तुमको नई2 बात सुनाता हूं। तुम हो स्टुडन्ट। भगवान पढ़ाते हैं। भगवान के तुम स्टुडन्टस हो। ऐसे ऊंच ते ऊंच पढ़ाई को तो एक दिन भी मिस न करनी चाहिए। एक दिन भी मुरली न सुनी तो फिर वह एपसेन्ट पड़ जाता है। अच्छे2 महारथी भी एपसेन्ट हो जाते हैं। वह तो समझते हैं हम सभी कुछ जानते हैं। न पढ़ा तो क्या हुआ। इरे अपसेन्ट पड़ जावेंगे। नापास हो जावेंगे। बाप खुद कहते हैं ऐसे2 पायंन्टस रोज सुनाता हूं जो समय पर समझाने में बहुत काम में आवेगा। न सुनेंगे तो फिर कैसे काम में लावेंगे। जहां तक जीना है अमृत पीना है। शिक्षा को धारण करना है। अपसेन्ट तो कब न होना चाहिए यहां वहां से ढूंढ़ करकोई से लेकर भी मुरली पढ़नी चाहिए। बाबा जानते हैं बहुत बच्चे हैं अच्छे2 नम्बरवन में जिनको गिनते हैं वह भी मुरली मिस कर देते हैं। अपना ही घमण्ड आ जाता है। और भगवान बाप पढ़ाते हैं उसमें तो एक दिन भी मिस न होना चाहिए। ऐसी2 गुह्य पायंन्टस निकलती है। जो तुम्हारा वा किसका भी कपाट खुल सकते हैं। आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है कैसे पार्ट चलता है इस समझने में तो टाईम चाहिए। बाप तो कहते हैं हम सभी उड़ा देते हैं सूक्ष्मवतन भी उड़ा देना है। पिछाड़ी में सिर्फ यही रहेगा अपने को आत्मा समझ मामेकं यादकरो। परन्तु अभी समझाना पड़ता है। पिछाड़ी की तो यही बात है। बाप को याद करते2 चले जाना है। याद से ही तुम पावन बनते जाते हो। कितनाबने हैं सो तो तुम समझ सकते हो। अपवित्र को जरा पद भीकम मिलेगा। मुख्य सिर्फ आठ रत्न ही हैं। जो पास विथ आनर हो जाते हैं। वह कुछ भी सज़ा नहीं खाते हैं। यह बड़ी महीन बातें हैं। कितनी ऊंच पढ़ाई है। स्वप्न में भी नहीं होगाकि हम देवता बन सकते हैं। कैसे बने थे यह तो किसको भी पता नहीं। अभी तुम समझते हो यह तो बहुत सहज है। सहज राजयोगसे ही यह बने हैं। वह भी जब बाप आवे तब समझावे ना तुमको समझाने में कितनी मेहनत लगती है। तुम समझते हो फिर भी को ई समझते नहीं हैं। जानते थोड़े ही हैं। मान लेवे तो झट चटक जावे। फिर नालेज भी चाहिए ना। राजाई मिलनी है इसमें भी कितना फर्क है। स्टुडन्टस तो ढेर के ढेर हैं। बुधि में बैठ और किसको बैठसमझावेसो तो नम्बरवार है। कोई आदमी ऐसा आता है, अच्छे2 समझाने वालों को बुलाया जाता है। क्योंकि खुद इतना समझदार नहीं बने हैं। इसमें है मेहनत। बुद्धि गृहस्थ व्यवहार में भी भल रहो बाप कहते हैं भल कुछ भी हो तुमको जो चाहिए सो करो परन्तु मुझे याद जरूर करो। वह अपना ऐसा प्रबन्ध निकालो। काम आद करते हुये भी तुम मुझे याद कर सकते हो। बाप को याद करने से तुम बहुत पदमभाग्यशाली बनते हो। उनके सामने तो वह धंधा आद कुछ काम के नहीं। कुछ भी काम में आनेवाले चीज़ नहीं। फिर करना तो पड़ता है ना। यह कब भी ख्याल न आना चाहिए हम शिव बाबा को देते हैं। और तुमको तो पदमा-पदमपति बनते हो। देने का ख्याल आया तो ताकत कम हो जाती है। हम तो शिव बाबा से पदम लेते हैं। यह तो हम अपनी ही कमाई करते हैं। मनुष्य दानपुण्य ईश्वर अर्पण करते हैं लेने लिए। तो वह देना थोड़े ही हुआ। भगवान तो दाता है ना। दूसरे जन्म में कितना देते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। भक्ति मार्ग में है ही अल्पक काल का सुख। तुम तो जानते हो हम बेहद के बाप से बेहद के सुख का वरसा पाते हैं। सन्यासी तो सुख को मानते ही नहीं। वह तो कह देते काग बिष्टा समान सुख है। वह फिर दूसरे को सुख दे कैसे सकेंगे। वह सुख के दुनिया के लिए कब राजयोग सिखला न सके। भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी बना न सके। श्रेष्ठाचारी तो देवतायें ही गाये हुये हैं। आजकल दुनिया में तो झूठ ही झूठ है। सच्च की स्ती नहीं। यह भी नई बात नहीं। बाप हर 5000वर्ष बाद आकर यह समझाते हैं। भक्ति मार्ग के गुरु लोगतुमको क्या2 सुनाते हैं। कितने शास्त्र आद पढ़े हैं। भक्ति मार्ग में शास्त्र आद पढ़ते जरूर हैं। भक्ति भी की है यह सभी कर्म-काण्ड के बधी के शास्त्र। तुमको कोई बोले शास्त्र पढ़े हो? बोलो हां। हां हां। हम तो तुमको सच्च बताते हैं। 2500 वर्ष हमने शास्त्र पढ़ी है, तुम तो सिर्फ इस एक जन्म के लिए पूछते हो। लेकिन हम 2500वर्ष

पढ़ें हैं। कितना अच्छा स्क्युरेट उत्तर तुम देते हो। सुन कर ही बायरे हो जावेंगे। परन्तु उन्हों क बुंधि में कुछ बैठता थोड़ें ही है। तुम कहते हो जरूर अपने ही अनुभव से। तुम प्रश्न का उत्तर भी दे सकते हो। कहेंगे इसने तो यह नई बात सुनाई। बोलो हम तो आधा कल्प से शास्त्र आद पढ़ते हैं। जन्म-जन्मांतर, कल्प-कल्पान्तर हम शास्त्र ही पढ़ते आये हैं। तो वह झट सन्तुष्ट होजावेंगे। बाप आते ही हैं ज्ञान देने के लिए। ज्ञान से ही सदगति होती है। शास्त्र आद पढ़ने से क्या फायदा। दुर्गति। दुर्गति। भारत का हाल देखो=कैसे कैसा है। चाहते हैं स्वर्ग हो। सो तो एक बाप ही स्थापन करते हैं। स्वर्ग था जरूर। अभी नहीं हैं। यह तुम किसको भी समझा सकते हो।

बोलो तुम्हारा धर्म ही अलग है। तुम स्वर्ग में तो आ नहीं सकते हो। ड्रामा में पार्ट ही नहीं। तुम्हारे लिए तो स्वर्ग अभी यहां ही हैं। अमेरिका में क्या लगा पड़ा है। क्या2 सुनाते रहते हैं। उनको तो यह पता नहीं कि यह है मायाबी पैराडाईज़। कलियुग में पैराडाईज़ कहां से आया। यह सभी माया का पाम्प है। जब माया का फुल पाम्प होता है तब ही विनाश होता है। अभी बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों आत्म-अभिमानी बनो। मनुष्य जो उल्टे लटक पड़े हैं उनको सुल्टा करो। बोलो पहले अपने को आत्मा समझो। पीछे यह शरीर है। तुम अपने को शरीर समझ उल्टा क्यों लटकते हो। उल्टा उल्लू लटकते हैं। कोई ठीक काम न करते हैं तो कहते हैं ना तुम तो जैसे उल्लू हो। उल्लू का बच्चा हो। है यथार्थ बात। परन्तु यह तुम समझते हो बाप तुमको सुल्टा बना रहे हैं। आधा कल्प तुम सुल्टे बनते हो फिर आधा कल्प तुम सुल्टा। अच्छा आदि में मनमनाभव फिर अन्त में भी कहते हैं मन्मनाभव। मूल बात ही यह है। बाप को याद करो। तुमको पावन बनना हैं। पढ़ाई तो बहुत ही सहज है। अन्दर में तुम जानते हो हम सभी आत्मायें हैं। बाप कहते हैं अपने को आत्मा मुझ बाप को याद करो। पुरुषार्थ करते2 सम्पूर्ण बनना है अन्त में। जिसने जितनी मेहनत की होगी वही करेंगे। फिर कल्प बाद भी वही करेंगे। यह दौड़-दौड़ है। यह है राजस्व अश्व मेध यज्ञ। इस शरीर रूपी घोड़े को इनमें स्वाहा करना है। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। यहसभी इस यज्ञ में स्वाहा हो जावेंगे। शरीर ही स्वाहा होंगे। आत्मा तो स्वाहा हो नहीं सकती है। हम आत्मा अविनाशी हैं। यहदेह विनाशी है। बाप आये ही हैं आत्माओं को पावन बनाने। स्वाहा कराने। कचड़-पट्टी को आग में जलाते हैं ना। इस समय सभी हैं तमोप्रधान पतित। इनको कहा जाता है नर्क। वह है स्वर्ग। यह बेहद का यज्ञ है। इसमें बेहद की पुरानी दुनिया स्वाहा होती है। फिर ऐसी दुनिया से दिल क्यों लगावें। अभी बाप को और नई दुनिया को याद करो। बस। यही पुरुषार्थ करना है। तो पाप कट जाये। तकलीफ तो कुछ नहीं। हठयोग आद की तो कोई बात ही नहीं। यह तो नालेज है। भक्ति मार्ग में तो झूठे गुरु लोग शिक्षा देते हैं कृष्ण को याद करो। गणेश के चित्र को याद करो। काम काज धंधा आद करते बुधि योग उसमें होगा। ऐसे थोड़े ही गुरु ने कहा है कब कब याद करो। निरन्तर याद करते हैं। इस में भी बाप कहते हैं मामेक याद करो। कैसे करो वह भी युक्ति बतलाते हैं। नहीं तो पद भ्रष्ट कम हो जावेंगा। यह है बेहद का खेल जो बाप बैठसमझाते हैं। यह सारी रचना कैसे रची हुई है पतित से पावन कैसे बनते हैं यह बाप ही बैठ समझाते हैं। बाप ही आकर सभी बच्चों को सुखी कर देते हैं। चाहते तो सभी हैं विश्व में शान्ति हो। शान्तिदेवा ... सो तो एक बाप ही स्थापन करते हैं। सच्ची2 प्राईज़ तुमको मिलती है। तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम जानते हो अभी जो करोड़पति हैं वह सभी गरीब बन जावेंगे। विनाश होना है ना। वारा-जमारा है (कभी इसका टर्न-कभी उसक टर्न)। शाहुकार गरीब गरीब शाहुकार बनते हैं। अभी जो शाहुकार हैं उन्हों को धन में बहुत ही महत्व है। तुम जानते हो यह पाई पैसे की है।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

:- बाप और स्वर्ग को बादशाही याद है?:-

****